REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

लोकप्रिय साहित्यःजनप्रिय साहित्य

डॉ. नीरू
असिसटैन्ट प्रोफेसर , दयाल सिंह सांध्य महाविद्यालय.

प्रस्तावना :

लोक यानी 'folk' अर्थात जन, जनता। लोगों द्वारा पसन्द किया गया साहित्य लोकप्रिय साहित्य। जो साहित्यकार समाज में प्रचलित रूढ़ियो विचारों के प्रति लिखता है वही लोगों में प्रसिद्धी प्राप्त कर लेता है। इसका ठोस उदाहरण देवकीनन्दन खत्री का 'चन्द्रकान्ता' उपन्यास है। उसमें जासूसी, अय्यारी और तिलस्मी तीनों का योग है और यह पाठकों को इतना अधिक पसन्द आया कि लोगों ने इस उपन्यास को पढ़ने के लिये हिन्दी सीखी। अय्यारी लोक प्रसिद्धी पाकर साधारण जनता के घरों तक पहुँच गयी। पहले गावों में जब दूल्हा बारात लेकर जाता था तब घरों की औरतें स्वतन्त्र होकर आदमियों के कपड़े पहन–पहन कर स्वांग रचती थीं।

लोकप्रियता का आधार क्या है? जब हम इस बात पर विचार करते हैं तो अनायास ही हमारी दृष्टि कुछ लोकप्रिय पौराणिक पात्रों पर चली जाती है। भगवान कृष्ण अत्यधिक लोकप्रिय हैं और उनका चरित्र आज भी लाखों लोगों को आन्दोलित करता है। क्या उनकी इस लोकप्रियता का आधार केवल उनका मोहक चेहरा अर्थात सुन्दर बांसुरी–वादन है? भगवान श्रीकृष्ण की अवतारी लीला उनके लोकरंजक रूप के कारण ही लोकप्रिय हुई। भगवान राम भी भारतभूमि में लोकप्रियता में किसी से कम नही हैं। उनके चरित्र में मर्यादित आचरण और लक्ष्यों के प्रति आडिग आस्था दिखाई पड़ती है। त्याग और बलिदान की अपूर्व क्षमता उनमें दिखती है। कष्ट सहना उनका स्वभाव है तथा दीन–हीन और शरणागत की रक्षा उनका संकल्प। ऐसी स्थिति में उनका लोकप्रिय होना स्वाभाविक है। इन दो अवतारी पुरूषों की लोकप्रियता का आधार लोकरंजन और लोकरक्षण की क्षमता दिखई पड़ती है।

लोकप्रियता के लिए अहम को त्यागना जरूरी है। इसी के त्याग से व्यक्ति सामाजिक समस्याओं से स्वयं को जोड़ता है। समाज व देश के लिए कष्ट सहने वाला, यातनाएं सहने वाला, चुनौतियों को सहने वाला व्यक्ति ही लोकप्रियता की ऊंचाइयों को छू लेता है। ''लोकप्रियता के लिए जरूरी है कि व्यक्ति के भीतर अहंकार न हो, यदि है तो वह लोकप्रिय व्यक्ति नहीं हो सकता।''

भारतीय सभ्यता और संस्कृति में राम और कृष्ण आज भी अपने गुणों के कारण श्रद्धा के पात्र बने हुए हैं। मीरा को जहर का प्याला पिलाया गया तो गांधी को सीने पर गोलियां मारी गई। भगतसिंह, चंद्रशेखर और राजगुरू को फांसी दी गई। बिना किसी भय के लोगों ने भीषण यातनाएं सही। जाहिर सी बात है ये सब यातनाएं अन्याय के प्रति आवाज उठाने वालों के लिए थीं। समाज चाहे मुंह से कुछ ना बोले परन्तु वह ऐसे लोगों को कभी क्षमा नहीं करता। भीष्म पितामह, कर्ण, दुर्योधन, युधिष्ठिर आदि को स्त्री की अवहेलना के लिए आज तक माफ नहीं किया गया। रावण को तो प्रतिवर्ष जलाया जाता है।

इतिहास चाहे समाज का हो या किसी देश का उसके पन्नों पर लोकप्रिय व्यक्ति और उसका साहित्य, संस्कृति, जीवन इत्यादि ही अंकित किया जाता है। दूसरे शब्दों में ये भी कहा जा सकता है कि इतिहास अपने पन्नों के लिए लोकप्रिय योग्यता को ही स्वीकार करता है। लोकप्रियता के लिए बनावटी योग्यता जरूरी नहीं है बल्कि उसके लिए मानवीय गुणों का विकास जरूरी है। समाज में क्या कुछ घटित हो रहा है उसकी नस को पकड़ लेना और लोक में प्रसिद्ध हो जाना, इसी संदर्भ में निम्न पंक्तियां दृष्टव्य हैं – ''इतिहास के पन्नों पर ऐतिहासिक नायक ही अपनी जगह नहीं बनाता बल्कि सामाजिक नायक भी अपनी जगह बनाता है।''

आज उत्तर आधुनिकता में वैश्विक भूमण्डलीकरण की आंधी हमारे समाज को पूरी तरह बहा रही है। भाषा, रीति–रिवाजों, त्यौहारों और स्थानीय खान–पान में भी बनावट आ गई है। ऐसे में लोक साहित्य हमें सच्चा दिखाई देता है। भाषा में अंग्रेजी का

प्रयोग ही ज्यादा होता है। स्थानीय बोली बोलने में लोग शर्म महसूस करते हैं। शादियां घरों के स्थान पर बैंक्वेट हॉल में हो रही हैं। त्यौहारों में मिठाई को समाप्त करके जूस और उपहारों का चलन प्रारम्भ हो चुका है। दीपावली पर तेल के दीपकों के स्थान पर बिजली के दीयों का प्रयोग हो रहा है। स्थानीय भोजनों के स्थान पर पिज्जा, बर्गर, चाइनीज और इटालियन पास्ता ने जगह ले ली है। मुलतानी मिट्टी के स्थान पर तरह–तरह के साबुन और आंवला, रीठा, शिकाकाई की जगह विभिन्न प्रकार के शैम्पू आ गए हैं। शादियों में लोकगीतों के स्थान पर रैप गीतों ने जगह बना ली है।

उपरोक्त सारी चीजें बनावटी हैं लेकिन लोक साहित्य बनावटी नहीं है। इस साहित्य का ऐतिहासिक महत्त्व भी है और भाषा वैज्ञानिक भी। इसके साथ–साथ सांस्कृतिक महत्त्व भी है। इस साहित्य के द्वारा इतिहासकारों ने इतिहास को परत दर परत उजागर किया है। भाषा के क्षेत्र में भी साहित्यकारों ने लोक को मुख्य विषय बनाया है। जार्ज ग्रियर्सन ने बोलियों की खोज की तथा उनके इलाके तथा क्षेत्रफल को निकाला।

आज भारत अपनी लोक संस्कृति के कारण विश्व में प्रसिद्ध है। लाखों की संख्या में विदेशी पर्यटक भारत की संस्कृति से वाकिफ होना चाहते हैं। डॉ. महेश गुप्त के अनुसार – ''लोक साहित्य वट वृक्ष के समान है जिसको लोक मानव ने अपने हृदय की भावनाओं से सींचा है, उसकी जड़ें बहुत गहरे रूप में पृथ्वी में जमी हैं जो कि हजारों, सैंकड़ों वर्षों से लोक मानव को ज्ञान, उल्लास और मनोरंजन रूपी छाया प्रदान करता चला आ रहा है।'' अतः हमें इसे बचाना है।

LBP PUBLICATION